तर्ज- होती कुछ भी मोहब्बत जो हमसे

मिली पाक जो निसवत तुम्हारी
मेरा रूहे चमन खिल गया है
आपने जो इनायत कर दी,
मानों सहरां में गुल खिल गया हो

1- महबूब पिया तुम मेरे,
मेरे वल्लभ हो साहिब मेरे
जो पैमाना कभी न हो खाली,
ऐसा जामें अर्श दे दिया है
2- आज इतनी पिला दे साकिया,
मुझे अर्श यहीं पे दिखा दे
तेरे मयखाने में दम निकले,
तुमने नाता वो जोड़ दिया है
3- आला अन्दाज़ तेरी मेहर के,
सुख देते यहाँ पर अर्श के
पा गया वो हकीकी मस्तियां,
तेरी नजरों से जो पी गया है

Nijanand App